वेश्यावृत्ति का अध्ययन : हरदोई जिले के विशेष सन्दर्भ में

एम.फिल. स्त्री अध्ययन उपाधि के लिए प्रस्तुत

लघु-शोध प्रबंध

सत्र : 2012-13

शोध निर्देशिका

सुप्रिया पाठक

(असिस्टेंट प्रोफेसर)

शोधार्थी

रजनीश कुमार अम्बेडकर

(एम.फिल., स्त्री अध्ययन विभाग)

पंजी.सं.-2012/03/212/006

स्त्री अध्ययन विभाग

संस्कृति विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित)

गांधी हिल्स, वर्धा- 442005 (महाराष्ट्र) भारत

अनुक्रमाणिका

आभार

भूमिका 1-3

प्रथम अध्याय : हरदोई जिले का भौगोलिक परिदृश्य 4-15

द्वितीय अध्याय : हरदोई जिले में वेश्यावृत्ति का इतिहास 16-36

तृतीय अध्याय : वेश्यावृत्ति का नारीवादी अध्ययन 37-50

चतुर्थ अध्याय : वेश्या महिलाओं की समस्याएँ 51-68

पंचम अध्याय : उपसंहार 69-72

संदर्भ सूची : 73-76

भूमिका

काफी लंबे समय से वेश्याओं के जीवन, संघर्ष तथा उनकी समस्याओं पर लिखने का मेरे मन में सवाल था। कुछ लेखक/कथाकारों ने तो बहुत करीब से उनके दुख-दर्दों को देखा और समझा हुआ है। बावजूद इसके उनके जीवन की विभिन्न परिस्थितियों पर नये सिरे से लिखने और समझने की आवश्यकता रही है। एक स्त्री अध्ययन विभाग का शोधार्थी होने के नाते और स्त्रीवादी दृष्टिकोण को अपनाते हुए मैंने 'वेश्यावृत्ति' के पेशे पर अध्ययन करने का विचार किया। वेश्यावृत्ति से जुड़ी फिल्मों, किताबों और लेखों में वेश्याओं के बारे में अध्ययन करते हुए। मैंने अपना यह अध्ययन कार्य क्षेत्र के माध्यम से पूरा किया है।

दुनिया के अन्य हिस्सों की तरह भारत में भी वेश्यावृत्ति काफी लबें समय से मौजूद रही। प्राचीन वेश्यावृत्ति ने अपने राजनीतिक निहितार्थों के साथ यौनकर्म तक सफर तय किया है तो दासी, देवदासी, गणिका और येलम्मा से होता हुए। नये आर्थिक परिवेश में भारत में भी अब यह कालगर्ल, मसाज सेंटर और फ्रेंड्शिप के रूप में फैलता जा रहा हैं। पितृसत्तात्मक समाज में ये बड़ा-बाजार है यौन-बाजार का। इसलिए शोध अध्ययन की समय सीमा कम होने के कारण और साधनों का अभाव होने के कारण मैंने अपना यह लघु-शोध वेश्यावृत्ति का अध्ययन हरदोई जिले के विशेष संदर्भ में किया है।

उत्तर प्रदेश के हरदोई जिले में वेश्यावृत्ति का प्रारूप महानगरों के अपेक्षा धर्म, जाति, वर्ग, संस्कृति व सामाजिक परिवेश के संदर्भ में विभिन्न

है। इसका कारण हरदोई जिले का भौगोलिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक परिप्रेक्ष्य महानगरों की तुलना से काफी अलग है। इसलिए वेश्यावृत्ति की अवधारणा का अध्ययन हरदोई जिले में हमें एक अगल तथ्यों की ओर ले जा सकता हैं।

हरदोई उ॰प्र॰ राज्य का प्रमुख नगर है। जो अपने ऐतिहासिक धरोहरों को समेटे हुए है। साण्डी पक्षी अभयारण्य, बालामऊ, माधोगंज, पिहानी, संडीला और बेहटा गोकुल आदि यहाँ के दर्शनीय स्थलों में से है। हरदोई जिला शाहजहाँपुर और लखीपुर-खीरी जिले के पश्चिम और सीतापुर जिले के पूर्व से घिरा हुआ है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह स्थान काफी महत्वपूर्ण माना जाता है। वेश्यावृत्ति का स्वरूप हरदोई जिले में हुए ऐतिहासिक युद्धों और सांस्कृतिओं के कारण इसे एक अलग अध्ययन की ओर सोचने को अग्रेषित करता है। जिसमें मैंने वेश्यावृत्ति का अध्ययन करने के लिए नीचे लिखे अध्यायों में विभाजन किया है।

प्रथम अध्याय □हरदोई जिले का भौगोलिक परिदृश्य□ विषय को लिया गया है। यह स्थान काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि, इसमें मुग़ल और अफगान शासकों के बीच कई युद्ध हुए हैं। बिलग्राम और साण्डी शहर के मध्य हुए युद्ध में हुमायूँ को शेरशाह सूरी ने हराया था।

पौराणिक कथा के अनुसार इस जगह को 'हरिद्रोही' के नाम से जाना जाता था। हिंदी में जिसका अर्थ "ईश्वर का विरोधी" होता है। जिस कारण हिरण्यकश्यप ने अपने पुत्र को कई बार मारने की कोशिश की। लेकिन वह सफल नहीं हो पाया। बाद में प्रह्लाद को बचाने के लिए स्वयं भगवान ने नरसिंह का अवतार लिया और हिरण्यकश्यप का बद्ध किया। हरदोई लखनऊ

मण्डल का एक ज़िला है, जो ऐतिहासिक दृष्टि से काफी महत्व रखता हैं।

द्वितीय अध्याय ‘हरदोई जिले में वेश्यावृत्ति का इतिहास’ विषय को लिया है। वेश्यावृत्ति कि पूरी संरचना को समझने के दौरान हरदोई जिले में नटपुरवा, समसापुर, पहाड़गंज, रमपुरवां, बालामऊ, हरदोई शहर का कमला नगर आदि गांव में शोध के दौरान वेश्यावृत्ति के बारे में अध्ययन किया। जिसमें मैंने कार्य क्षेत्र में जाकर वेश्याओं की स्थिति का अवलोकन किया।

तृतीय अध्याय ‘वेश्यावृत्ति का नारीवादी अध्ययन’ विषय में वेश्यावृत्ति या ‘सेक्स वर्क’ के बारे में नारीवादी विचारकों के अलग-अगल मतों को पेश किया है। क्योंकि वेश्यावृत्ति या सेक्स वर्क को समझने के लिए श्रम की महत्ता, उत्पादन, पुनरुत्पादन, राज्य का नियंत्रण व प्रभाव, सामाजिक संरचना और यौन कार्य को श्रम मानना या ना मानना नारीवादियों में बहस का विषय है। इसलिए नारीवादियों के वेश्यावृत्ति के बारे में विचारों को लिया हैं।

चतुर्थ अध्याय ‘वेश्या महिलाओं की समस्याएँ’ विषय में वेश्याओं को दी जाने वाली गलियों, उत्पीड़न तथा उनके ऊपर आरोपित सामाजिक अपवाद/कलंक नैतिक और अनैतिक विषय को प्रस्तुत किया है। साथ ही धोखाधड़ी, धमकी, हिंसा, बाल-यौन-उत्पीड़न, बालश्रम, बलात्कार तथा नस्लवाद के खिलाफ आपराधिक धाराओं को भी पेश करने की कोशिश की है।

अंत: में मैंने वेश्यावृत्ति का किताबों, लेखों, फिल्मों, और खुद वेश्याओं से साक्षात्कार करके एक निष्कर्ष तक पहुँचने की कोशिश की है। तथा चारों अध्यायों के आधार पर उपसंहार तैयार किया है। फिर भी मैं अपनी तरफ से

शोध की समय सीमा कम होने और साधनों का अभाव होने के कारण शोध में रहने वाली कमियों के लिए मांफी चाहूँगा।

अध्याय प्रथम

हरदोई जिले का भौगोलिक परिदृश्य

हरदोई उत्तर प्रदेश राज्य का एक प्रमुख नगर है। साण्डी पक्षी अभयारण्य, बालामऊ, माधोगंज, पिहानी, विलग्राम, संडीला और बेहता गोकुल आदि यहाँ के दर्शनीय स्थलों में से है। यह जिला शाहजहाँपुर और लखीमपुर-खीरी ज़िले के उत्तर, लखनऊ और उन्नाव ज़िले के दक्षिण, कानपुर और फ़र्रुख़ाबाद ज़िले के पश्चिम और सीतापुर ज़िला के पूर्व से घिरा हुआ है।

□सेक्स वर्करों के खिलाफ हिंसा समाप्त करने के लिए अंतरराष्ट्रीय दिवस प्रतिवर्ष 17 दिसम्बर को मनाया जाता है। सेक्स वर्करों, उनके अधिवक्ताओं, दोस्तों, परिवारों और सहयोगी दलों ने सबसे पहले 2003 में मनाया गया।□ [36]

यह कार्य डॉ.एनी छिड़क और सेक्स वर्कर्स आउटरीच परियोजना संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा शुरू की गई। 'लाल छाता' सेक्स वर्करों के अधिकारों के लिए एक महत्वपूर्ण प्रतीक बन गया है। और ये तेजी से अंतरराष्ट्रीय दिवस के रूप में 17 दिसम्बर को मनाया जा रहा है। *□सबसे पहले एक विरोधी हिंसा मार्च के लिए वेनिस सेक्स वर्करों द्वारा 2002 में अपनाया, लाल छाते वर्करों के भेदभाव के खिलाफ प्रतिरोध का प्रतीक आ गए जो दुनिया भर में है।□* [37]

उपसंहार

भारत के परिप्रेक्ष्य में अगर देखें तो हमें पता चलता है कि वेश्यावृत्ति आदिकाल से लेकर अब तक मौजूद है। मेरा शोध कार्य इसी विषय में एक

36. 17 दिसंबर को प्रेस रिलीज शहरी न्यायमूर्ति द्वारा, *□मोमबत्ती की रौशनी में निगरानी सेक्स वर्कर के खिलाफ हिंसा के लिए एक अंतरराष्ट्रीय दिवस सेक्स वर्करों के खिलाफ ध्यान केन्द्रित।□*

37. दैनिक मैकगिल के लिए 17 दिसम्बर 2003 अनुच्छेद, शान्नोन □□□□□ द्वारा सेक्स *□कार्यकर्ताओं और समर्थकों को एकजुट□*

कड़ी मात्र है। शुरू से ही परंपरा के नाम पर स्त्रियों का शोषण जारी रहा है। जिसमें हमें दासी, गणिकाए, देवदासी, येलेम्मा आदि के रूप में समय-समय पर हमारे भारतीय समाज में देखने को मिलता है। शोध के माध्यम से हमने जानने कि कोशिश की कि आखिर क्या कारण है जिससे अब तक वेश्यावृत्ति और सेक्स वर्क में श्रम कि उपयोगिता राज्य का नियंत्रण, पितृसत्ता का दबाव किस तरीके से काम करता है।

नयें आर्थिक परिप्रेक्ष्य में अगर हम भारत कि बात करें तो हमें पता चलता है कि देह व्यापार (वेश्यावृत्ति) का स्वरूप बदलता जा रहा है। अब यह कार्ल गर्ल्स, मसाज सेंटर, फ्रेंड्शिप के नाम पर इस कार्य को समाज में एक बड़े बाजार के रूप में 'यौन बाजार' देखने को मिल रहा है।

नारीवादी विचारधाराएं व आंदोलन जिस तरह से समाज बनाने कि बात करते हैं। जिसमें पितृसत्ता, राज्य व सामाजिक ढ़ाचे का आपसी गठजोड़ शोषण के जिस बुनियाद पर टीका है। समाज में इस तरह के नियम कानून बनाए गए कि जिससे संपत्ति पे किसका कब्जा और उसको कैसे नियंत्रित किया जाए। इसलिए स्त्री को विवाह नामक संस्था से बांध दिया। जिससे उत्पन्न संतान का उसकी संपत्ति का कब्जा बना रहे। मेरे शोध का क्षेत्र हरदोई जिले के उन गाँवों में जहाँ वेश्यावृत्ति लगभग तीन सौ पचास सालों से चली आ रही है। खास कर नट समुदाय के उन लोगों में वेश्यावृत्ति कि परंपरा पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है। वेश्यावृत्ति कि पूरी संरचना को समझने के दौरान हरदोई जिले में नटपुरवा, समसापुर, पहाड़गंज, रमपुरवां, बालामऊ, हरदोई शहर का कमला नगर आदि गांव में शोध के दौरान वेश्यावृत्ति के बारे में पता चला जब मैं नटपुरवा गांव में चंद्रलेखा (50-55 वर्ष) नामक महिला, जो पहले वेश्यावृत्ति करती थीं, अब नहीं। उनसे बात-

चीत के दौरान उन्होंने बताया कि नटपुरवा गांव में लगभग 350 सालों से यहाँ वेश्यावृत्ति होता रहा है। ये पीढ़ी दर पीढ़ी से चली आ रही है। यहाँ कि आबादी नट (अनुसूचित जाति) नामक जातिय समुदाय से है।

शोध के दौरान हमने पाया कि चंद्रलेखा (पूर्व वेश्या) नामक महिला जो हैं इन्होनें 'आशा' नाम कि एक संस्था के सहयोग से वेश्यावृत्ति को इस गांव व अन्य गाँवों से खत्म करने के लिए आन्दोलन व काफी प्रदर्शन भी की। जिसका परिणाम यह हुआ कि आज के परिप्रेक्ष्य में नटपुरवा जैसे अन्य गांव में वेश्यावृत्ति लगभग 25% गई है आगे बात-चीत के दौरान बताया कि आज के समय में हर साल गाँव कि लड़कियों कि शादी भी होने लगी है जबकि पहले नहीं होती थी। ये एक तरह कि नई शुरुआत करीब चार-पाँच वर्ष पूर्व ही शुरू हुई है। उनके पारिवारिक समीकरण के बारे में जानने कि कोशिश कि तो उन्होंने बड़ी जद्दो-जहद के बाद बताया कि "हमारे तीन लड़के नीरज कुमार, अनुज कुमार और मोनू कुमार एवं एक पुत्री पूनम है। जिसमें बड़े और छोटे लड़के की शादी हो गई है, साथ ही पुत्री की भी शादी हो गई है। मोनू जो मेरा सबसे छोटा लड़का है वो एक संस्था "मिलान" के सहयोग से मेरे गांव में ही पढ़ता है।"

चंद्रलेखा का जीवन संघर्षों से भरा रहा। इंसानी जीवन इतना कठिन हो सकता है मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था। चंद्रलेखा ने अपने संघर्षमय जीवन के बारे में बताया कि *"जब मेरी पहली लड़की पैदा हुई तो मेरे पास कुछ भी आमदनी नहीं थी। मतलब मेरे पास दस रुपये भी नहीं थे फिर भी मैंने सोच लिया था कि मैं इस धंधे में अपने लड़की को कभी नहीं आने दूंगी।"* आगे उन्होंने बताया कि *"एक दिन में तीन से चार लोगों से शारीरिक संबंध स्थापित करना पड़ता था और पैसे के नाम पर पाँच से दस रूपये के*

बीच ही मिलते थे। कभी-कभी वो भी नहीं मिलाता था।” आगे चंद्रलेखा जी ने बताया कि “रिक्शा चालक, ट्रक ड्राईवर, विधायक, सांसद तक के लोग इस गांव में आते हैं।”

जब मैंने उनके लड़के की योग्यता के बारे में सुना तो हैरान रह गया क्योंकि उनका लड़का जो गांव में पढ़ाने का कार्य करता है उसकी एजुकेशन कुछ भी नहीं है। कहने का तात्पर्य है कि शिक्षित होते हुए भी उसके पास डिग्री कुछ भी नहीं है। उनके लड़के से भी जब मैंने साक्षात्कार किया तो उसने बताया कि *“गांव में जब किसी के घर जा कर शिक्षा के बारे में बताने कि कोशिश करता हूँ तो लोग मेरी बात को उतना महत्व नहीं देते हैं और मेरे गांव में शिक्षित लोग ना के बराबर हैं।”* और आगे बात-चीत के दौरान जिस प्रकार कि जानकारी मिली उससे मैं स्तंभ रह गया। उसने बताया कि *“बचपन में जब मैं बाजार या अन्य किसी जगह जाता था तो लोग मुझे घृणा और अपमानित कि नजर से देखते थे। बच्चा होने के नाते मैं समझ नहीं पाता था कि लोग मुझे इस तरह से क्यों देखते हैं ?”*

शोध के दौरान गाँवों में मैंने पाया कि बहुत कुछ बदला तो है लेकिन सब कुछ ना के बराबर है। आज जिस प्रकार से पूरी दुनियाँ में आधुनिकता का परचम मानवीय सभ्यता दिखाने की कोशिश कर रही है। वहीँ आज भी नटपुरवा जैसे गाँवों में महिलाएं दो-वक्त कि रोटी के लिए अपने जिस्म को इस पितृसत्तात्मक समाज में बेचने को मजबूर हैं।

भारत में आज मर्दवादी समाज ने महिलाओं को दोयम दर्जे पर रख दिया है। शोध के दौरान मन में कई सवाल उभर कर सामने आये लेकिन मैं उस सवालों का जवाब तलाशने की कोशिश तो की फिर भी जवाब नहीं

मिला पाया। लेकिन मन में आज भी एक सवाल और जवाब गूंजता है कि वेश्या अपनी जिस्म को बेचती तो हैं लेकिन जो उस जिस्म को खरीदने वाला होता है या खरीदता है, उसे क्या नाम दिया जाये ? क्या कोठे पर बैठ जाना ही वेश्या है ? क्या महिलाएं ही वेश्या है ? दो वक्त की रोटी के लिए वेश्या बन जाना अगर वेश्यावृत्ति है तो उस वेश्या के पास जाने वाला व्यक्ति को क्या नाम दिया जाए ?

निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि वेश्यावृत्ति का मूल कारण 'अर्थ' है। कुछ अपवाद को छोड़ दिया जाए तो हम पाते हैं कि वेश्यावृत्ति में संलग्न वो सारी स्त्रियाँ कहीं न कहीं अपनी जीविका को चलाने के लिए अपनी देह को बेचती हैं। पितृसत्ता ने जिस प्रकार से स्त्री वर्ग को हाशिये पर रखा है। अगर इसका विश्लेषण किया जाये तो हम पाते हैं कि □पितृसत्ता ने स्त्री शोषण के कई रूपों में तो बाट दिया है लेकिन इसके बावजूद समाज के लोग भी जो आज इस परंपरा के बने रहने के लिए जिम्मेदार हैं।"

संदर्भ-सूची

1- विजयश्री, प्रियदर्शिनी (2010) : देवदासी या धार्मिक वेश्या ? एक पुनर्विचार, वाणी प्रकाशन, 21-A, दरियागंज, नई दिल्ली

2- कांबले, उत्तम (2008) : देवदासी, संवाद प्रकाशन, आई-499,शास्त्रीनगर, मेरठ

3- नैमिशराय, मोहनदास (2004) : आज बाजार बंद है, वाणी प्रकाशन, 21-A, दरियागंज, नई दिल्ली

4- आर्य साधना, मेनन निवेदिता, लोकनीता जिनी (2001) : नारीवादी राजनीति-संघर्ष एवं मुददें, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, नई दिल्ली

5- ब्राउन, लुइज़ (2005) : यौन दासियाँ एशिया का सेक्स बाजार, वाणी प्रकाशन, 21-A दरियागंज, नई दिल्ली

6- जोशी, गोपा (2006) : भारत में स्त्री असमानता, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, वि.वि.दिल्ली

7- सुमन, डॉ. मंजु (2004) : दलित नारी एक विमर्श, सम्यक प्रकाशन, 32/3, क्लब रोड, पशिचम पुरी, नई दिल्ली

8- पचौरी, सुधीश (2000) : स्त्री देह के विमर्श, आत्माराम एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली

9- मोहन, नरेन्द्र (2001) : सआदत हसन मंटो कि कहानियाँ, किताब घर प्रकाशन, 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली

10- बुटालिया, उर्वशी (2002) : खामोशी के उस पार, वाणी प्रकाशन, 21-A, दरियागंज, नई दिल्ली

11- सागर, एस॰ एल॰ (1977) : भारत की संतप्त नारी, सागर प्रकाशन, 223, दरीबा, मैनपुरी (उ.प्र.)

12- एंगेल्स, फेडरिक (1974) : परिवार, निजी सम्पति और राज्य की उत्पति, प्रगति प्रकाशन, मास्को

13- खेतान, डॉ. प्रभा : स्त्री-उपेक्षिता (सीमाने दे बोउवार), हिन्दी पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, जे-40 जोरबाग लेन, नई दिल्ली